पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियाँ

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय
एक

पौलुस का कारावास

THIRD MILLENNIUM
MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 4

तैयारी 5

नोट्स 7

I. परिचय (0:25) 7

II. पृष्ठभूमि (2:50) 7

A. गिरफ्तारी से पूर्व घटित घटनाएं (3:50) 7

B. यरुशलेम में गिरफ्तारी (8:48) 8

C. कैसरिया में कारावास (19:16) 10

D. रोम में कारावास (26:45) 12

III. सुचारु सेवकाई (32:35) 13

A. प्रेरितों के काम (33:55) 14

1. कष्टों के बारे में जानकारी (34:50) 14
2. उद्देश्य की जानकारी (36:05) 14
3. आशीष की जानकारी (38:49) 16

B. कलीसियाओं को पत्र (39:35) 16

1. प्रचार (40:21) 16
2. प्रार्थना (41:52) 17
3. कष्ट (44:40) 17
4. लेखन (51:06) 19

IV. धर्मविज्ञानीय एकता (54:59) 20

A. सृष्टि का राजा (56:30) 20

1. सर्वोच्चता (57:07) 20
2. सम्मान (59:44) 21
3. दृढ़ संकल्प (1:02:15) 22

B. मसीह के साथ संयोजन (1:07:15) 23

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. नैतिक जीवन (1:11:57) 24
1. राजा के रूप में मसीह् (1:14:10) 24
2. मसीह् के साथ संयोजन (1:17:13) 25

V. उपसंहार **(1:21:48)** **25**

पुनर्समीक्षा के प्रश्न **26**

उपयोग के प्रश्न **32**

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
  - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
  - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
  - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
  - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें** — जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
  - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
  - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
  - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

तैयारी

- पढ़ें प्रेरितों के काम 21-28

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

रूपरेखा

I. परिचय (0:25)

II. पृष्ठभूमि (2:50)

- A. गिरफ़्तारी से पूर्व घटित घटनाएं (3:50)
- B. यरूशलेम में गिरफ़्तारी (8:48)
- C. कैसरिया में कारावास (19:16)
- D. रोम में कारावास (26:45)

III. सुचारू सेवकाई (32:35)

- A. प्रेरितों के काम (33:55)
    1. कष्टों के बारे में जानकारी (34:50)
    2. उद्देश्य की जानकारी (36:05)
    3. आशीष की जानकारी (38:49)
- B. कलीसियाओं को पत्र (39:35)
    1. प्रचार (40:21)
    2. प्रार्थना (41:52)
    3. कष्ट (44:40)
    4. लेखन (51:06)

IV. धर्मविज्ञानीय एकता (54:59)

- A. सृष्टि का राजा (56:30)
    1. सर्वोच्चता (57:07)
    2. सम्मान (59:44)
    3. दृढ संकल्प (1:2:15)
- B. मसीह् के साथ संयोजन (1:7:15)
- C. नैतिक जीवन (1:11:57)
    1. राजा के रूप में मसीह् (1:14:10)
    2. मसीह् के साथ संयोजन (1:17:13)

V. उपसंहार (1:21:48)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:25)

कारागृह से लिखी पत्रियाँ : पौलुस द्वारा भिन्न कलीसियाओं और लोगों को लिखी गई पत्रियाँ जब वह कारावास में था।

II. पृष्ठभूमि (2:50)

A. गिरफ्तारी से पूर्व घटित घटनाएं (3:50)

सन् 56 या 57 ईस्वी : पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा की लगभग समाप्ति के समय पौलुस अकाल का सामना कर रहे निर्धन मसीहियों की आर्थिक सहायता करने के लिए यरुशलेम की ओर गया।

पवित्र आत्मा ने उसे सचेत कर दिया था कि जब वह यरुशलेम में पहुंचेगा तो उसे गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

विश्वासियों ने पौलुस की गिरफ्तारी की भविष्यवाणी की थी। पौलुस जानता था कि ये आने वाली कठिनाइयों के लिए उसे तैयार करने के लिए हैं।

भविष्यवक्ता अगबुस ने भविष्यवाणीय चिन्ह के रूप में स्वयं अपने हाथ और पांव बांध लिए ताकि वह पौलुस को सचेत करे कि यदि वह यरुशलेम गया तो उसे गिरफ्तार करके बंदी बना लिया जाएगा।

पौलुस समझ गया था कि उसका आगामी कारावास "प्रभु यीशु के नाम के लिए होगा।"

B. यरुशलेम में गिरफ्तारी (8:48)

पौलुस को आशा थी कि जब यहूदी मसीही अन्यजातियों से यह भेंट प्राप्त करेंगे तो उनकी कृतज्ञता उन्हें अन्यजातियों को मसीह में अपने सगे भाइयों के रूप में ग्रहण करने में उत्साहित करेगी।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस ने अन्यजातियों के बीच एक अन्यजाति के समान व्यवहार किया। परन्तु वह सुसमाचार के लिए यहूदी परंपराओं का पालन करने में प्रसन्न था।

पौलुस यरूशलेम में मंदिर के रीति-रिवाजों में सम्मिलित होने के लिए सहमत हो गया:

- मूसा की व्यवस्था के प्रति अपने समर्पण को दर्शाने के लिए।
- यहूदियों में मसीह की खातिर।
- कलीसिया में यहूदियों और अन्यजातियों के मेल-मिलाप की खातिर।

यहूदियों को गलतफहमी हो गई कि त्रुफिमुस ने भी उस प्रांगण में प्रवेश किया था, और वे इससे अति क्रोधित हो गए।

इन यहूदियों ने पूरे नगर को पौलुस के विरुद्ध भड़का दिया और एक क्रोधित भीड़ ने उसे मार डालने के इरादे से इस्राएल के प्रांगण से बाहर घसीट लिया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस ने महासभा के समक्ष स्वयं का बचाव किया और स्पष्ट किया कि क्यों बहुत से यहूदी उसकी शिक्षाओं से अप्रसन्न थे।

चूंकि पौलुस रोमी नागरिक था इसलिए उसे कैसरिया मरितिमा को भेज दिया गया।

फेलिक्स : रोम के यहूदिया क्षेत्र का राज्यपाल।

C. कैसरिया में कारावास (19:16)

कैसरिया मारितिमा : रोम के यहूदिया क्षेत्र की राजधानी।

तिरतुल्लुस ने तर्क दिया कि पौलुस ने शांति भंग की थी और दंगे भड़काए थे और मन्दिर का उल्लंघन किया था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

आरोप लगाने वालों के प्रति पौलुस के प्रत्युत्तर में चार मुख्य बिन्दू थे :

1. उसके विरुद्ध कोई गवाह नहीं था।

2. शांति उसने नहीं बल्कि दूसरों ने भंग की थी।

3. मन्दिर को अशुद्ध करने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी।

4. महासभा ने उसे दोषी नहीं पाया था।

फेलिक्स ने पौलुस के मुकदमें को दो वर्षों तक लटकाया जब तक कि पुरकियुस फेस्तुस राज्यपाल के रूप में न आ गया।

पौलुस अपने मुकदमें की सुनवाई यरूशलेम में नहीं चाहता था। उसने रोमी नागरिक होने के अपने अधिकार को इस्तेमाल किया कि उसका मुकदमा स्वयं नीरो कैसर के द्वारा सुना जाए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस ने विश्वास किया कि उसका कारावास उसके सुसमाचार की सेवकाई को बढ़ाएगा।

D. रोम में कारावास (26:45)

59 ईस्वी का अंतिम भाग : पौलुस को यूलियुस नामक रोमी सेनापति के अधिकार में रखा गया और उसे एशिया माइनर जाने वाले जहाज में रखा गया।

एक जोरदार तुफान आया जो उन्हें कौदा के पार भूमध्यसागर में कहीं दूर ले गया। अंत में जहाज माल्टा द्वीप के पास समुद्री चट्टान से टकरा गया और समुद्री लहरों से नष्ट हो गया।

पौलुस और जहाज के सब लोग तीन महिनों तक माल्टा द्वीप में भटकते रहे।

पौलुस ने माल्टा के लोगों को सुसमाचार सुनाया और कई चमत्कारिक चंगाइयां भी कीं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

60 ईस्वी के आरंभ में : पौलुस और उसके साथी इटली की ओर चल पड़े। उस वर्ष के अंत में पौलुस रोम पहुंचा और उसे गृहावास में रखा गया।

60 से 62 ईस्वी : पौलुस रोम में गृहवास में रहा। उसे मेहमानों से मिलने और आजादी से सिखाने की अनुमति थी।

"और वह पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा। और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा और बिना रोक टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा। (प्रेरितों के काम 28:30-31)"

III. सुचारु सेवकाई (32:35)

परमेश्वर ने इन घटनाओं को संचालित किया ताकि रोम में पौलुस का कारावास पश्चिमी जगत के केन्द्र में मसीह के सुसमाचार को फैलाने में पौलुस को एक अवसर प्रदान करे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

A. प्रेरितों के काम (33:55)

कारावास में पौलुस के अनुभव प्रेरितों के काम के लेखक लूका के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे। उसने पौलुस के जीवन के इस समय से संबंधित घटनाओं के विषय में नौ अध्याय समर्पित किए।

1. कष्टों के बारे में जानकारी (34:50)

मसीह और उसकी सेवा करने में जो कठिनाइयां पौलुस के समक्ष आने वाली थीं उसके विषय में उसे जानकारी थी।

मसीह और उसकी सेवा करने में जो कठिनाइयां पौलुस के समक्ष आने वाली थीं उसके विषय में उसे जानकारी थी और वह शहीद होने के लिए भी तैयार था।

2. उद्देश्य की जानकारी (36:05)

पौलुस को अपने कष्टों के उद्देश्य की जानकारी थी। परमेश्वर की योजना उसके कष्टों को सुसमाचार की उन्नति के लिए भी इस्तेमाल करने की थी। .

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

कारवास वह साधन बना जिसके द्वारा पौलुस ने अपनी सेवकाई को पूरा किया।

- पौलुस ने उस भीड़ के समक्ष अपनी गवाही प्रस्तुत की जो उसकी मृत्यु चाहती थी। (प्रेरितों के काम 22:1-21).

- पौलुस ने यहूदी शासन मण्डल, महासभा के समक्ष सुसमाचार और मसीह के पुनरुत्थान की गवाही दी। (प्रेरितों के काम 23:1-10).

- पौलुस ने कैसरिया न्यायालय में सुसमाचार का प्रचार किया — सार्वजनिक रूप से कैसरिया के न्यायालय में और फिर गुप्त रीति से राज्यपाल फेलिक्स और उसकी यहूदी पत्नी द्रूसिल्ला के समक्ष। (प्रेरितों के काम 24:14-26).

- पौलुस ने नए राज्यपाल फेस्तुस के समक्ष और यहूदी राजा अग्रिप्पा और उसकी पत्नी बिरनिके के समक्ष सुसमाचार की घोषणा की। (प्रेरितों के काम 25:18–26:29).

- पौलुस ने उन सबके समक्ष पपरमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार किया जो उसे देखने के लिए रोम में आए थे। (प्रेरितों के काम 28:23-31).

पौलुस को कहे गए मसीह के शब्द इन सारे कष्टों के उद्देश्य का सार बताते हैं- ढ़ाढ़स बान्ध; क्योंकि जैसी तू ने यरूशलेम में मेरी गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी। (प्रेरितों के काम 23:11)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. आशीष की जानकारी (38:49)

पौलुस इस समय में अपनी सेवकाई पर परमेश्वर की आशीष के प्रति जानकार था।

- पौलुस ने उस जहाज पर सवार लोगों के जीवनों को बचाने के लिए दर्शन प्राप्त किया और और उसका अर्थ भी बताया जो समुद्री-चट्टान से टकरा गया था।
- उसने बीमारों को चंगा किया।
- जो विश्वासी उसके पास आए उसने उनकी जरुरतों के प्रति सेवकाई भी की।

B. कलीसियाओं को पत्र (39:35)

1. प्रचार (40:21)

पौलुस ने मुख्यत: सुसमाचार का प्रचार करने के लिए नए अवसरों को पाने हेतु ही कारावास के दण्ड को सहा था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस ने प्रार्थनाओं का आग्रह किया ताकि उसे सुसमाचार का प्रचार करने का अवसर मिले।

2. प्रार्थना (41:52)

पौलुस कलीसियाओं के लिए निरन्तर प्रार्थना कर रहा था।

पौलुस के कारावास ने उसके द्वारा प्रार्थना मे बिताए जाने वाले समय को बढ़ा दिया।

प्रार्थना में पौलुस के प्रयासों ने उनके प्रति एक उत्साहपूर्ण और कीमती सेवकाई की रचना की जो उसके करीब नहीं थे।

3. कष्ट (44:40)

जब कष्टों का लक्ष्य और प्रतिफल सुसमाचार की उन्नति के माध्यम से परमेश्वर के राज्य का विस्तार हो तो कष्ट सेवकाई बन जाते हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हमारे कष्ट कलीसिया को आशीष प्रदान कर सकते हैं, सुसमाचार की गवाही दे सकते हैं, और कलीसिया को मिलने वाली महिमा को बढ़ा सकते हैं।

कष्ट सुसमाचार के सत्य के प्रति निर्विवाद साक्षी है।

हमें दूसरों के लाभ के लिए कठिनाइयां झेलने और मृत्यु झेलने के लिए भी तैयार रहना चाहिए

हमें उन कष्टों के प्रति आभारी रहना चाहिए जो दूसरे इस कारणवश उठाते हैं।

पौलुस के कष्ट स्वयं मसीह के कष्टों की निरन्तरता ही थे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जब हम कष्ट सहते हैं तो यीशु भी कष्ट सहता है :

- क्योंकि यीशु हमें बहुत प्रेम करता है।
- वह सभी विश्वासियों से जुड़ा हुआ है।

कलीसिया के कष्ट मसीह के कष्ट हैं।

मसीह को उसके आगमन तक कष्ट सहना अनिवार्य है। उन निर्धारित कष्टों को पूरा करने में मसीह की सहायता करना पौलुस का सौभाग्य था।

4. लेखन (51:06)

कारावास के वर्षों के दौरान पौलुस की लेखन सेवकाई को उसकी नए नियम की पत्रियों में दर्शाया गया है।

- कुलुस्से की कलीसिया को लिखी पत्री
- इफिसुस की कलीसिया को लिखी पत्री
- फिलिप्पी की कलीसिया को लिखी पत्री
- कुलुस्से के व्यक्ति फिलेमोन को लिखी पत्री

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस की सेवकाई में उसे सब जानकारी थी और उसकी सेवकाई उन कलीसियाओं और लोगों, जिनको उसने पत्र लिखे थे, की परिस्थितियों के अनुसार बहुत ही ध्यान से क्रियान्वित की गई थी।

पौलुस ने अपने पत्रों को उन धर्मविज्ञानीय विषयों की ओर भी निर्देशित किया जो पूरी कलीसिया से संबंधित थे।

IV. धर्मविज्ञानीय एकता (54:59)

पौलुस द्वारा कारावास से लिखी पत्रियों में कुछ महत्वपूर्ण धर्मशिक्षा-संबंधी आधार पाए जाते हैं।

- समान सुसमाचार की पुष्टि करती हैं।
- सुसमाचार को प्रस्तुत करने का समान तरीका पाया जाता है।
- सुसमाचार के समान पहलूओं पर बल देती हैं।

एक समान आधार : यीशु मसीह पूरी सृष्टि का विजेता और शासक है।

A. सृष्टि का राजा (56:30)

1. सर्वोच्चता (57:07)

मसीह में में अपनी इच्छा को पूर्ण करने की सामर्थ और शक्ति है, और उसमें ऐसा करने का वैध अधिकार और हक है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जब यीशु का स्वर्गारोहण हुआ, पिता परमेश्वर ने उसे पूरी सृष्टि पर इस प्रकार की सर्वोच्चता प्रदान कर दी थी।

पूरी शक्ति के साथ यीशु मसीह पूरी सृष्टि पर राज्य करता है।

सृष्टि के सारे तत्व उसकी इस प्रकार आज्ञा नहीं मानते हैं जैसे उन्हें माननी चाहिए। परन्तु फिर भी यीशु के पास आज्ञाकारिता की मांग करने और उसे पूरा करवाने का अधिकार और शक्ति है।

2. सम्मान (59:44)

मसीह की महिमा और गौरव आदर, अनुसरण और आराधना के प्रतुयत्तरों की मांग करता है।

यीशु परमेश्वर है, और परमेश्वर हर संभव उच्चतम सम्मान के योग्य है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. दृढ़ संकल्प (1:02:15)

मसीह अपने राज्य की स्थापना करने के लिए पृथ्वी पर पुन: लौटने के प्रति दृढ़ संकल्प है।

मसीह के आगमन के विषय में पौलस का दृष्टिकोण अंत समय के पारंपरिक यहूदी दृष्टिकोणों से निकला है।

यीशु ने प्रकट किया था कि यह पारंपरिक यहूदी विचारधारा पूरी तरह से सही नहीं थी। आगामी युग वर्तमान युग को बदल देगा, परन्तु एकदम से नहीं। ये दोनों युग कुछ समय के लिए एक साथ आएंगे।

यीशु स्वर्ग से राजा के समान राज्य करता है। वह जिस प्रकार इस समय स्वर्ग में राज्य करता है उसी प्रकार पूर्ण एवं महिमान्वित रूप में अपनी पूर्ण सृष्टि पर शासन करना चाहता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हमारी भावी मीरास निश्चित है। पूर्ण स्थापित राज्य में हमारी मीरास को प्रदान करने के लिए यीशु का आना आवश्यक है।

B. मसीह के साथ संयोजन (1:07:15)

जब हम यीशु में विश्वास करते हैं तो हम रहस्यात्मक, आत्मिक रूप में उससे जुड़ जाते हैं।

पौलुस ने मसीह के राजत्व में सहभागिता के द्वारा बार-बार अपने पाठकों को उत्साहित किया।

मसीह में अपने संयोजन के द्वारा :

- हम मसीह की मृत्यु से जुड़ गए हैं।
- हम उसके पुनरुत्थान और जीवन में भी जुड़ गए हैं।
- हम उसके स्वर्गारोहण और राजत्व में भी जुड़ गए हैं।
- हम स्वर्गीय स्थानों में मसीह के साथ बैठे हुए हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस ने मसीह के साथ हमारे संयोजन की बात विश्वासियों को इस बात से उत्साहित करने के लिए की कि उन्होंने अकेले कष्ट नहीं सहा, और न ही उन्होंने व्यर्थ में कष्ट सहा है।

परन्तु पौलुस ने इस बात से राहत प्राप्त की कि जब हम सुसमाचार के लिए कष्ट सहते हैं तो मसीह के साथ हमारा संयोजन इस बात की पुष्टि करता है कि मसीह हमारे साथ कष्ट सहता है और सहानुभूति प्रकट करता है।

C. नैतिक जीवन (1:11:57)

पौलुस ने नैतिक मसीही जीवन के बारे में शिक्षा देने में उतना ही समय व्यतीत किया जितना उसने धर्मशिक्षा-संबंधी विषयों को संबोधित करने में लगाया।

1. राजा के रूप में मसीह (1:14:10)

क्योंकि मसीह सर्वोच्च और न्यायी है, तो उसकी हर आज्ञा को मानना हमारा वैध और नैतिक दायित्व है।

कि मसीह का राजत्व भक्तिपूर्ण जीवन जीने के लिए हमारी एक मूलभूत प्रेरणा हो।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. मसीह के साथ संयोजन (1:17:13)

मसीह के साथ हमारा संयोजन हमें नैतिक जीवन जीने के लिए प्रेरित करता और योग्य बनाता है :

- मसीह अपने आत्मा के साथ हम में वास करता है और इसके द्वारा हमें नया स्वभाव देता है एवं हमें भले कार्य करने को विवश करता है।

- परमेश्वर ने हमें आज्ञा दी है कि जो उसके पुत्र से जुड़े हुए हैं उन्हें पवित्र जीवन जीना आवश्यक है। उसने हमारे द्वारा किए जाने वाले कार्यों को पूर्वनिर्धारित किया हुआ है।

- हम मसीह के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। यह हमें प्रेरित करता है कि हम एक दूसरे से भी वैसा ही व्यवहार करें जैसा स्वयं मसीह से करते हैं, और जैसा हम चाहते हैं कि दूसरे हमसे व्यवहार करें।

V. उपसंहार (1:21:48)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. पौलुस की गिरफ्तारी से पहले कौनसी महत्वपूर्ण घटनाएं घटीं?

2. किन परिस्थितियों के कारण यरूशलेम में पौलुस को बंदी बनाया गया?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. कैसरिया में पौलुस के कारावास की घटनाओं और प्रकृति को सारगर्भित करो।

4. रोम में पौलुस के कारावास की घटनाओं और प्रकृति को सारगर्भित करो।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. किस प्रकार पौलुस के कारावास ने परमेश्वर के विषय में और पौलुस की अपनी सेवकाई के विषय में महत्वपूर्ण बातों को प्रकट किया?

6. उन तीन बातों का वर्णन करो जो प्रेरितों के काम की पुस्तक हमें कारावास के दौरान पौलुस की सेवकाई के बारे में सिखाती है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. उन चार बातों का वर्णन करो जो हम कारावास में उसकी सेवकाई के विषय में पौलुस की पत्रियों से सीखते हैं।

8. उन तीन रूपों का वर्णन करो जिनमें पौलुस ने सृष्टि पर मसीह के राजत्व की सैद्धांतिक भूमिका को विकसित किया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. मसीह के साथ विश्वासी के संयोजन की पौलुस की धर्मशिक्षा का वर्णन करो। इसके क्या-क्या आशय हो सकते हैं?

10. मसीह के राजत्व और मसीह के साथ हमारे संयोजन द्वारा प्रेरित नैतिक जीवन के लिए पौलुस की व्याख्या और मांगों को सारगर्भित करो।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

11. पौलुस की कारावास की पत्रियों को जोड़ने वाला मुख्य धर्मविज्ञानी सत्य क्या है? यह सृष्टि पर मसीह के राजत्व, मसीह के साथ हमारे संयोजन और नैतिक जीवन के विषयों से कैसे संबंधित है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. पौलुस ने यरूशलेम में आगामी खतरों के बारे में कई चेतावनियों को प्राप्त किया, परन्तु फिर भी वह उस नगर की ओर बढ़ता गया। किस बात ने पौलुस को विश्वास में आगे बढ़ने का दृढ़-विश्वास और साहस प्रदान किया? हम पौलुस के उदाहरण से हम किस प्रकार सीख सकते हैं जब उसने मुश्किल परिस्थितियों और कठिनाइयों का सामना किया?

2. पौलुस क्यों खुले रूप से यहूदियों और यूनानियों दोनों के समक्ष सेवा कर पाया? 1 कुरिन्थियों 9:20-21 में पौलुस के शब्दों को आज के विश्वासियों के द्वारा लागू करने का क्या अर्थ हो सकता हैं?

3. परमेश्वर ने सुसमाचार और परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए पौलुस के कारावास का इस्तेमाल किया। परमेश्वर ने किस प्रकार आपके जीवन में मुश्किल परिस्थितियों का प्रयोग अपने सुसमाचार और राज्य को बढाने में किया है?

4. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार कष्ट मसीही सेवकाई का रूप हो सकते हैं। कष्टों के पौलुस के दृष्टिकोण की तुलना कष्टों के बारे में आपकी अपनी वर्तमान समझ से करें।

5. एक कैदी के रूप में पौलुस की परिस्थिति अच्छी नहीं थी, परन्तु वह फिर भी सुसमाचार के प्रचार के लिए अवसरों को ढूंढता रहा। सुसमाचार का प्रचार करने के लिए आपके पास कैसे अवसर हैं?

6. पौलुस ने प्रायः मसीह के साथ हमारे संयोजन के बारे में बात की। किन रूपों में मसीह के साथ हमारे संयोजन की धर्मशिक्षा का ज्ञान आपको आशा और राहत प्रदान करता है?

7. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org